मूल्य आधारित शिक्षा

नरेश कुमार*

मूल्य वे सिद्धांत हैं जो किसी सभ्य संस्कृति वाले समाज की नींव डालते हैं। ये व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन के व्यवहार एवं क्रियाओं को सामाजिक जीवन में करते हैं। क्या ये मूल्य महत्वपूर्ण, अपेक्षित और सही हैं? यह निर्धारित करने का स्तर और प्रवृत्ति मूल्य है। मानव मूल्य वह सद्गुण समूह अथवा ऐसी आचार संहिता है जिसे बच्चा अथवा व्यक्ति अपने संस्कारों एवं पर्यावरण के माध्यम से अपनाकर अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन-शैली का निर्माण तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। मूल्यों में समाज के लोगों के विचार, विश्वास, आस्था एवं निष्ठा आदि सम्मिलित होते हैं। ये मूल्य जहाँ एक ओर व्यक्ति के अंत:करण द्वारा नियंत्रित होते हैं तो वहीं दूसरी ओर ये व्यक्ति विशेष की संस्कृति एवं परंपरा द्वारा निरंतर परिभाषित होते हैं तथा इनकी कसौटी 'बहुजन हित' मानी जाती है। मूल्य जहाँ एक ओर व्यक्ति के व्यवहार की दिशा को आधार देते हुए उसके व्यक्तित्व का समग्र एवं संतुलित विकास करते हैं, तो वहीं दूसरी ओर ये समाज को उचित एवं न्यायपूर्ण व्यवस्था भी प्रदान करते हैं। मानव जीवन को आनंदमयी एवं सुखमय बनाने में इन मूल्यों का अतुलनीय योगदान रहता है तथा इन मूल्यों के अर्जन एवं विकास में शिक्षा एक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका का निर्वाह करती है।

मूल्य क्या हैं? यह एक विचारणीय प्रश्न है। प्रत्येक व्यक्ति एवं समाज के कुछ निश्चित मूल्य होते हैं। ये मूल्य समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप बदल भी जाते हैं अथवा समय के साथ-साथ उनमें थोड़ा-बहुत परिवर्तन भी आ जाता है। यदि मूल्यों की साधारण से शब्दों एवं भाषा में बात करें तो यह कहा जा सकता है कि मूल्य तो वास्तव में व्यक्ति एवं समाज विशेष को आधार प्रदान करते हैं अर्थात जैसे व्यक्ति अथवा समाज के मूल्य होंगे, वैसा ही उस व्यक्ति एवं समाज का आधार होगा। यदि आधार की बात करें तो यह कहा जा सकता है कि मूल्य के आधार पर ही व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं समाज की आधारशिला सुनिश्चित होती है। अब यह प्रश्न उठता है कि क्या मूल्य अपने आप ही निर्मित होते हैं? या यूँ कहें कि मूल्यों का निर्माण स्वयं ही हो जाता है? नहीं! मूल्य अपने आप ही निर्मित नहीं होते और न ही इनका निर्माण स्वयं होता है अपितु इनके निर्माण के पीछे शिक्षा की एक बड़ी ही सशक्त एवं प्रभावपूर्ण भूमिका होती है। जिस

*प्रवक्ता, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, घुम्मनहेड़ा, नयी दिल्ली 110073

© NCERT not to be republished

तरह मानव का आधार उसके मूल्य होते हैं, ठीक उसी तरह मूल्यों का आधार शिक्षा होती है और जब ये दोनों आधार मिलकर एक साथ समायोजित होते हैं अथवा उनमें सामंजस्य स्थापित होता है तो व्यक्ति एवं समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। तो क्या यह समझ या मान लिया जाए कि मूल्य एवं शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं? अर्थात मूल्यों के अभाव में शिक्षा नहीं और शिक्षा के अभाव में मूल्य नहीं? यह एक विचारणीय प्रश्न है। निःसंदेह प्रत्येक व्यक्ति इस प्रश्न की व्याख्या अलग-अलग एवं अपने तरीके से करना चाहेगा। लेकिन इस प्रश्न के उत्तर के संदर्भ में एक बात तो निश्चित होगी कि उत्तर चाहे कोई भी हो पर मूल्य एवं शिक्षा एक-दूसरे के पूरक ही नज़र आते हैं। भारतीय समाज में कुछ प्रचलित मूल्य इस प्रकार हैं— सत्य, अहिंसा, सहयोग, बलिदान, ईमानदारी, त्याग, सहिष्णुता, भलाई, परोपकार, मानवता, बंधुत्व, प्रेम, न्याय, विश्वास एवं सहनशीलता आदि।

मूल्य क्या हैं?

मूल्य एक प्रकार का मानक एवं निर्देशक सिद्धांत हैं जो सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप चलने एवं उसके अनुसार कार्य करने का दिशा-निर्देश देते हैं। वास्तव में समाज में जो कुछ अच्छा, सही एवं अपेक्षित माना जाता है, उसे मूल्य कहते हैं। ये व्यक्ति एवं समाज के सामाजिक, नैतिक, धार्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि पर आधारित होते हैं जिन्हें व्यक्तियों के द्वारा अपने दैनिक जीवन, व्यवहार एवं आचरण में उतारा अथवा शामिल किया जाता है, वहीं दूसरी ओर इस संदर्भ में यह भी कहा जा सकता है कि मूल्य वास्तव में गहन रूप से स्थापित वे भावनाएँ हैं, जिनकी समाज एवं व्यक्तियों में गहरी पैठ होती है।

- मूल्य मानव समूहों एवं व्यक्तियों के द्वारा सामाजिक एवं प्राकृतिक संसार में सामंजस्य स्थापित करने के उपकरण एवं साधन हैं। मूल्य वास्तव में ऐसे प्रतिमानों को कहा जाता है जो व्यक्तियों की विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। वास्तव में ये मूल्य सामाजिक अस्तित्व के केंद्रीय तत्व कहे जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मूल्य एक प्रकार से अपने वास्तविक एवं मूल रूप में सामूहिक लक्ष्य होते हैं तथा जिनके प्रति समाज के सदस्यों की स्वाभाविक एवं प्रगाढ़ आस्था होती है।
- क्या महत्वपूर्ण, अपेक्षित और सही है, यह निर्धारित करने का स्तर और प्रवृत्ति मूल्य है।
- मूल्य वे गहरी स्थापित भावनाएँ हैं जिनका परिपालन समाज के सदस्य करते हैं तथा जो प्रायः समाज के सदस्यों की क्रियाओं और व्यवहारों पर बाध्यतामूलक प्रभाव डालते हैं।
- मूल्य सामाजिक रूप से स्वीकृत वे प्रेरक एवं प्राप्य लक्ष्य हैं जो सामाजीकरण सीखने एवं अनुकूलता की प्रक्रियाओं द्वारा हमारे अंदर समा जाते हैं और बाद में वही हमारी प्राथमिकताओं, मानदंडों और प्रेरणाओं का रूप ले लेते हैं।
- मूल्य वे आदर्श, विश्वास या मानक हैं जिन्हें एक समाज या समाज के अधिकतर सदस्यों ने स्वीकार किया है।
- सामाजिक मूल्य वे सामान्य सिद्धांत हैं जो दिन-प्रतिदिन के जीवन में व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। ये मानव व्यवहार को दिशा प्रदान करने

© NCERT not to be republished

के साथ-साथ अपने आप में आदर्श एवं उद्देश्य भी हैं। सामाजिक मूल्यों में केवल यही नहीं देखा जाता कि क्या होना चाहिए, बल्कि यह भी देखा जाता है कि क्या सही है और क्या गलत है।

मूल्यों की आवश्यकता क्यों?

मूल्यों की आवश्यकता को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

- बच्चे के चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के उचित विकास के लिए
- सामाजिक समन्वय, एकीकरण, लोक कल्याण एवं लोकतंत्र के विकास के लिए
- जीवन एवं समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए
- विभिन्न प्रकार की जागरूकता उत्पन्न करने तथा समस्याओं (क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार, उत्पीड़न, हिंसा, संप्रदायवाद, आंतकवाद, आदि) के निवारण के लिए
- बच्चे के अंदर विभिन्न प्रकार के गुणों, योग्यताओं एवं कौशलों के विकास के लिए
- बच्चे के अंदर लोकतांत्रिक मूल्यों एवं नागरिकता के उत्तम गुणों के विकास के लिए
- बच्चे एवं व्यक्ति के जीवन को सही दिशा एवं आधार प्रदान करने के लिए
- संस्कृति एवं सभ्यता के उचित संरक्षण तथा अच्छे भविष्य के लिए
- सामाजिक उन्नति, शांति एवं राष्ट्रीय विकास के लिए
- विश्व शांति एवं संपूर्ण मानवता के कल्याण एवं विकास के लिए, आदि।

मूल्यों की विशेषताएँ

मूल्यों से संबंधित कुछ प्रमुख विशेषताएँ अग्रलिखित हैं—

- मूल्य सापेक्षिक एवं विचारपरक होते हैं।
- मूल्य मूल रूप से सामाजिक मानक होते हैं।
- मूल्यों की व्यक्तियों एवं समाज के बीच गहरी पैठ होती है।
- मूल्य सामाजिक सामूहिक अंतःक्रिया की उपज एवं परिणाम होते हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान होता है।
- मूल्यों के विषय में समाज एवं लोगों में एकमतता एवं एकरूपता पायी जाती है।
- व्यक्ति की अधिकतर क्रियाएँ मूल्यों के अनुकूल होती हैं अर्थात मूल्य ही व्यक्ति विशेष की क्रियाओं का निर्धारण एवं निर्देशन करते हैं।
- मूल्यों के साथ लोगों अथवा समूह की भावनाएँ जुड़ी रहती हैं तथा कोई भी समाज ऐसा नहीं है जो मूल्यविहीन हो।
- मूल्य बच्चे के चरित्र निर्माण एवं उसके व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं।
- मूल्य व्यक्ति के अंदर सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करते हैं तथा उसे अच्छे जीवन के लिए प्रेरित करते हैं।
- मूल्य प्रत्येक व्यक्ति एवं समाज के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण होते हैं और व्यक्तियों एवं समाज के बीच एकीकरण एवं समन्वय स्थापित करते हैं।
- मूल्यों का संबंध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर समूचे समाज से होता है।
- मूल्य सामाजिक उन्नति एवं राष्ट्रीय विकास के लिए अनिवार्य होते हैं।

© NCERT not to be republished

- मूल्य व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन के जीवन में व्यवहार एवं क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं।
- मूल्य सामाजिक मानक हैं जिनके द्वारा किसी व्यवहार, वस्तु, गुण, साधन एवं लक्ष्य आदि को सही या गलत अथवा वांछित और अवांछित ठहराया जाता है, आदि।

मूल्यों का वर्गीकरण एवं प्रकार

मूल्यों का वर्गीकरण एवं उसके प्रकार निम्नलिखित हैं—

1. **सामाजिक मूल्य**— इसके अंतर्गत समाज से संबंधित मूल्य आते हैं; जैसे— सामाजिक व्यवहार, सामाजिक अनुशासन, सामाजिक न्याय, सामाजिक अनुरूपता, सामाजिक समायोजन, सामाजिक दायित्व, सामाजिक सहायता, सामाजिक कल्याण, सामाजिक संहिता, सामाजिक आचरण, सामाजिक सहनशीलता एवं संवेदना आदि।
2. **नैतिक मूल्य**— नैतिक मूल्य वे मूल्य होते हैं जो व्यक्ति एवं समाज की नैतिकता से संबंधित होते हैं; जैसे—त्याग, सत्यता, निष्ठा, ईमानदारी, नम्रता, परोपकार, कल्याण, आत्म-अनुशासन, करुणा, वचनबद्धता एवं उत्तरदायित्व आदि।
3. **सांस्कृतिक मूल्य**—सांस्कृतिक मूल्य वे मूल्य होते हैं जो किसी समाज, देश अथवा राष्ट्र की संस्कृति से संबंधित होते हैं। ये मूल्य समाज एवं राष्ट्र की विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने का कार्य करते हैं। इन मूल्यों में शामिल हैं— प्रेम, सहयोग, भाईचारा, आपसी समन्वय, एकता, मित्रता, आदर, विश्वास, समर्पण, त्याग, ईश्वर के प्रति निष्ठा, भक्ति, भावना, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, संस्थाएँ एवं परंपरा, आदि।
4. **आर्थिक मूल्य**— आर्थिक मूल्य मुख्यतः समाज एवं व्यक्ति की आर्थिक दशा से संबंधित होते हैं और इन मूल्यों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष संबंध जीविकोपार्जन अर्थात धन अथवा वित्त से होता है; जैसे— जीवन-यापन, शारीरिक श्रम, कार्य के प्रति निष्ठा एवं साधन उपलब्धता एवं संपन्नता आदि।
5. **धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्य**— धार्मिक एवं आध्यामिक मूल्य वे मूल्य होते हैं जो किसी राष्ट्र एवं समाज विशेष के धर्म एवं उससे जुड़ी मान्यताओं, संस्कारों एवं विश्वासों आदि से संबंधित होते हैं, जैसे— पूजा, भक्ति, विश्वास, आस्था, समर्पण, मान्यता, उपासना, सौंदर्य, शुभ संकल्प, आत्म-संबंध, आत्म-साक्षात्कार आदि।
6. **मानसिक मूल्य**—मानसिक मूल्य वे मूल्य होते हैं जो हमारी मानसिक शक्तियों के विकास में सहायक होते हैं। इन मूल्यों के अंतर्गत कल्पना शक्ति, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन, चिंतन शक्ति, निर्णय निर्माण शक्ति, सृजनात्मकता, तर्क-शक्ति, उच्च विचार, जिज्ञासा, उत्सुकता, बुद्धिमत्ता आदि आते हैं।
7. **शैक्षिक मूल्य**— शैक्षिक मूल्य वे मूल्य होते हैं जो किसी व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की शैक्षिक आवश्यकताओं से संबंधित अथवा उनके अनुरूप होते हैं। शैक्षिक मूल्यों के अंतर्गत अनुशासन, आत्मानुभूति, स्वाध्याय, सृजनात्मकता का पोषण, शुभ संकल्प, आज्ञा पालन, बुद्धिमत्ता, उच्च विचार, सच्चरित्रता, शिष्टता, सहयोग, नम्रता, तथा कर्तव्य पालन आदि।
8. **नागरिक एवं लोकतांत्रिक मूल्य**— नागरिक मूल्यों का संबंध नागरिकता अथवा व्यक्ति

© NCERT not to be republished

विशेष के संदर्भ में उत्तम नागरिकता के गुणों के विकास से संबंधित होता है। नागरिक मूल्यों के अंतर्गत निम्न मूल्यों को समावेशित किया जा सकता है— अधिकार, कर्तव्य, मानवता, समाज-सेवा, परस्पर सहयोग, देशभक्ति, उत्तरदायित्व, श्रम की प्रतिष्ठा, ईमानदारी, समानता, स्वतंत्रता, आत्मनियंत्रण एवं राष्ट्रीय चेतना आदि।

9. **पर्यावरणीय मूल्य**— पर्यावरणीय मूल्य वे मूल्य हैं जिनका संबंध पर्यावरण एवं वातावरण से होता है। ये मूल्य व्यक्ति एवं समाज के अंदर पर्यावरण से संबंधित जागरूकता एवं संवेदनशीलता उत्पन्न करते हैं तथा पर्यावरण को अच्छा एवं उन्नत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। इन मूल्यों में शामिल हैं— पर्यावरण संरक्षण, अक्षय विकास, प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग, पर्यावरण के प्रति जागरूकता, जल संरक्षण, वन संरक्षण, प्रकृति के प्रति संवेदना, वनस्पतियों एवं जीवों आदि की रक्षा, वातावरण के प्रति प्रेम आदि।

10. **राजनीतिक मूल्य**— राजनीतिक मूल्यों के अंतर्गत उन मूल्यों को समावेशित किया जाता है जो किसी समाज, राज्य, राष्ट्र अथवा देश की राजनीतिक प्रणाली एवं राज-व्यवस्था से संबंधित होते हैं। इन मूल्यों के अंतर्गत उत्तम नागरिकता, राजनीतिक अधिकार, मानवाधिकार, सामाजिक एवं राजनीतिक दायित्व एवं चेतना, लोकतंत्र, चुनाव, राजनीतिक न्याय, राजनीतिक प्रणाली एवं व्यवस्था, दलीय भावना, नीति आदि से संबंधित मूल्य आते हैं।

11. **राष्ट्रीय मूल्य**— राष्ट्रीय मूल्य वे मूल्य होते हैं जो किसी राष्ट्र विशेष एवं उसकी विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों से संबंधित होते हैं। राष्ट्रीय मूल्य, राष्ट्र के निर्माण एवं उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन मूल्यों में राष्ट्रीय चेतना, मानवता, उदारता, परस्पर सहयोग, अहिंसा, देशभक्ति, नागरिकता, साहस, राष्ट्र-प्रेम, समर्पण, बंधुता, एक-दूसरे के प्रति आदर, न्याय, समूह-भावना, नेतृत्व, दूरदर्शिता, सर्वधर्म समभाव, संप्रभुता, सहायता, राष्ट्र की एकता एवं अखंडता आदि सम्मिलित होते हैं।

12. **वैश्विक अथवा सार्वभौमिक मूल्य**— वैश्विक एवं सार्वभौमिक मूल्य वे मूल्य हैं जो संपूर्ण विश्व के कल्याण एवं प्रगति से संबंधित होते हैं। ये मूल्य किसी एक जाति, देश, धर्म, समूह अथवा राष्ट्र विशेष आदि के न होकर समूचे विश्व के होते हैं। समूचे विश्व के मूल्यों के कारण इन मूल्यों को वैश्विक अथवा सार्वभौमिक मूल्य कहा जाता है। इन मूल्यों के अंतर्गत सबकी स्वतंत्रता, समानता, न्याय, अधिकार, मानव की गरिमा, सत्य, अहिंसा, विश्व-परिवार, विश्व-ग्राम विश्व-बंधुता, विश्व-नागरिकता, विश्व-चेतना, विश्व-शांति एवं विश्व-धर्म आदि से संबंधित मूल्य आते हैं।

भारतीय संविधान की उद्देशिका अथवा प्रस्तावना में निहित मूल्य

समाजवाद, पंथनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य, सामाजिक, आर्थिक और सामाजिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता, व्यक्ति की गरिमा, राष्ट्र की एकता और अखंडता तथा बंधुता आदि।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में वर्णित मूल्य

लोकतंत्र, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, परोपकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवीय गरिमा एवं अधिकार, दूसरे के प्रति आदर, विचार एवं क्रिया की आज़ादी, लोगों की भावनाओं एवं कल्याण के प्रति संवदेनशीलता।

© NCERT not to be republished

मूल्यों का विकास कैसे किया जाए?

मूल्यों का विकास एक निरंतर एवं विकासशील प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया के चार प्रमुख आधार स्तंभ हैं जो बच्चों में मूल्यों के विकास को सुनिश्चित करते हैं। ये आधार स्तंभ हैं—

- माता-पिता एवं परिवार
- विद्यालय
- समाज एवं समुदाय
- परिस्थितियाँ एवं वातावरण

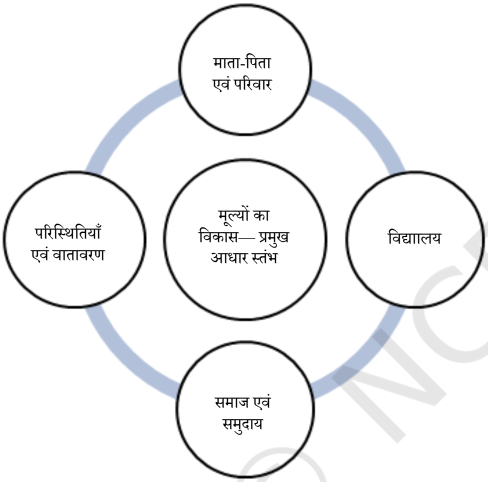

ये चारों आधार स्तंभ अपने आप में पृथक भी हैं और समायोजित भी। पृथक इस संदर्भ में कि मूल्यों के विकास में प्रत्येक की अपनी महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट भूमिका है और समायोजित इस संदर्भ में कि प्रत्येक का प्रभाव एक-दूसरे पर पड़ता है। किसी एक स्तंभ के अभाव में दूसरे स्तंभ की कल्पना ही नहीं की जा सकती अर्थात ये चारों ही मूल्यों के विकास के संदर्भ में एक-दूसरे से पूर्ण रूप से जुड़े हुए हैं तथा चक्रीय प्रक्रिया के परिणामस्वरूप एक का प्रभाव दूसरे पर व्यापक रूप से पड़ता है।

बच्चों में मूल्यों का विकास करने के संदर्भ में कुछ प्रमुख सुझाव एवं उपाय निम्नलिखित हैं—

- मूल्यों के विकास के संदर्भ में माता-पिता, परिवार एवं समुदाय की सहभागिता एवं दायित्व को सुनिश्चित किया जाए।
- समाज, समुदाय एवं स्थानीय शैक्षिक संस्थानों द्वारा मूल्यों के विकास हेतु सक्रिय एवं प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह किया जाए।
- बच्चों में मूल्यों के विकास के प्रति विद्यालय एवं समाज के अंदर एक आशावादी दृष्टिकोण विकसित किया जाए।
- बच्चे के व्यक्तित्व एवं चरित्र को विभिन्न प्रकार के मूल्यों के आधार पर विकसित किया जाए।
- मूल्यों को बच्चे के व्यावहारिक जीवन के साथ जोड़ा जाए तथा उनमें इससे संबंधित जागरूकता एवं अभिप्रेरणा उत्पन्न की जाए।
- विद्यालय एवं शिक्षक के द्वारा इनके विकास के संदर्भ में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया जाए।
- मूल्यों के विकास के संदर्भ में माता-पिता, परिवार, समुदाय एवं विद्यालय आदि में उचित सहयोग एवं समन्वय स्थापित किया जाए।
- मूल्यों के विकास के संदर्भ में विद्यालय अथवा संस्थाओं के द्वारा या उनके माध्यम से विभिन्न प्रकार के साहित्य का निर्माण किया जाए।
- विद्यालय एवं शिक्षक के द्वारा बच्चों में मूल्यों का विकास करने के संदर्भ में ऐसी विधियाँ एवं रणनीतियाँ अनुप्रयोग में लायी जाएँ जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के अंदर विभिन्न प्रकार के मूल्यों का विकास करने में सक्षम हों।

© NCERT not to be republished

- पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर तक स्कूली पाठ्यचर्या को पुनर्गठित किया जाए जिसमें ज्ञान-अर्जन और मूल्यों के विकास और बहुविध कौशलों के निर्माण की संभावनाओं को देखा जा सके।
- शिक्षक एवं विद्यालय द्वारा मूल्यांकन प्रक्रिया को इस तरह से पुनः निर्मित किया जाए जिसके माध्यम से बच्चों में मूल्यों से संबंधित होने वाले विकास को परखा जा सके।
- विद्यालयों में मूल्यों एवं उससे संबंधित कौशलों को प्रोत्साहित करने वाली अनुपूरक पाठ्यसामग्री तैयार की जाए तथा इससे संबंधित विभिन्न प्रकार की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाए।
- विद्यालयी शिक्षा के दौरान उपयुक्त गतिविधियों के माध्यम से सभी विषयों में शांति से संबंधित मूल्यों का संवर्द्धन किया जाए।
- पाठ्यचर्या निर्माण में मूल्य शिक्षा को समग्र रूप से रखा जाए तथा उसके व्यावहारिक अनुप्रयोग से बच्चों में मूल्यों के विकास को सुनिश्चित किया जाए।
- शिक्षा के द्वारा समाज में मूल्यों एवं आदर्शों को बढ़ावा दिया जाए जिससे कि बच्चों में मूल्यों के प्रति तार्किक प्रतिबद्धता विकसित हो सके।
- पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसमें व्यावहारिक एवं लौकिक विषय तथा आध्यात्मिक एवं प्रासंगिक मूल्यपरक विषय दोनों का संतुलित संयोग हो।
- मूल्यों के विकास अथवा उसकी शिक्षा के संदर्भ में मीडिया को एक हिस्सेदार एवं सहायक के रूप में सहयोजित अथवा शामिल किया जाए आदि।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में मूल्यों से जुड़ी संस्तुतियाँ

- अध्ययन-अध्यापन की परिस्थितियों को शिक्षकों के लिए उत्साहवर्धक, सहयोगी और मानवीय बनाया जाए ताकि विद्यार्थियों को अपनी शारीरिक तथा बौद्धिक संभावनाओं के पूर्ण विकास का मौका मिले। साथ ही ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए वांछनीय सामाजिक और मानवीय मूल्यों के विकास का भी अवसर मिल सके।
- पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर तक स्कूल पाठ्यचर्या को पुनर्गठित किए जाने की आवश्यकता है जिसमें ज्ञान-अर्जन, मूल्यों के विकास और बहुविध कौशलों के निर्माण के संदर्भ में काम की शिक्षाशास्त्रीय संभावनाओं को देखा जा सके एवं स्कूली शिक्षा के दौरान उपयुक्त गतिविधियों के माध्यम से सभी विषयों में शांति के मूल्यों का संवर्द्धन तथा शांति के लिए शिक्षा को शिक्षक-प्रशिक्षण का भी एक अवयव बनाया जाना चाहिए।
- सामाजिक विज्ञान स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर सम्मान और विविधता जैसे मानवीय मूल्यों के लिए एक जनाधार का निर्माण करने और उसका विस्तार करने की सैद्धांतिक ज़िम्मेदारी का भी वहन करता है। यदि इसे माना जाए तो सामाजिक विज्ञान शिक्षण का ध्येय बच्चे में एक आलोचनात्मक नैतिक और मानसिक ऊर्जा की स्थापना करना है जिससे वे उन सामाजिक बाध्यताओं से मुक्ति पा सकें जो इन मूल्यों को हानि पहुँचाते हैं। पर्यावरण, जाति/वर्ग समानता और राज्य दमन जैसी समस्याओं पर अंतर्विषयक विधि से चर्चा करके पाठ्यपुस्तकों को बच्चे की

© NCERT not to be republished

विचार प्रक्रिया और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए।

मूल्य एवं आदर्श— वे मूल्य एवं आदर्श जिन्हें शिक्षा को समाज में बढ़ावा देना चाहिए और जिनसे विद्यार्थी में तार्किक प्रतिबद्धता आए, वे हैं—

- समानता— स्तर और अवसरों की समानता
- स्वतंत्रता— विचार, अभिव्यक्ति, आस्था और उपासना की स्वतंत्रता
- वैचारिक स्वायत्तता— तर्क-आधारित विचारों की स्वतंत्रता
- कार्य की स्वायत्तता— चयन की स्वतंत्रता, निर्णय की योग्यता और स्वतंत्रता तथा उन पर कार्य करने की क्षमता और स्वतंत्रता
- दूसरों का सम्मान एवं चिंता— अपनी स्वयं की स्वतंत्रता और स्वायत्तता से आगे बढ़कर समाज के सभी वर्गों की स्वायत्तता, सरोकार और उनके प्रति संवेदना।
- न्याय— सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक।

शिक्षा विद्यार्थी को न केवल इन मूल्यों से खुशी लेना सिखाए, बल्कि दूसरों की समानता, आज़ादी और स्वायत्तता की इज्जत करनी भी सिखाए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, सामाजिक विज्ञान का शिक्षण, राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार-पत्र, पृष्ठ 3

मूल्यों के विकास के संदर्भ में शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका

बच्चों में विभिन्न प्रकार के मूल्यों के विकास के संदर्भ में शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है—

- अध्यापक द्वारा विभिन्न प्रकार के मूल्यों के संदर्भ में स्वयं को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया जाए।
- विद्यालय में बच्चों के अंदर कर्तव्यनिष्ठा, सहनशीलता एवं आत्मविश्वास आदि से संबंधित गुणों का विकास किया जाए।
- लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास के संदर्भ में विद्यालय द्वारा स्वयं को एक आदर्श लोकतांत्रिक संस्था के रूप में प्रस्तुत किया जाए।
- विद्यालय द्वारा विभिन्न प्रकार के मूल्यों का विभिन्न संदर्भों में व्यावहारिक अनुप्रयोग सुनिश्चित किया जाए।
- विभिन्न प्रकार के मूल्यों के संदर्भ में शिक्षक एवं विद्यालय द्वारा सादा जीवन एवं उच्च विचार की अवधारणा को अपनाया जाए।
- शिक्षक एवं विद्यालय/मूल्यों के विकास के संदर्भ में समाज के समक्ष एक पथ-प्रदर्शक की भूमिका का निर्वाह करें।
- इन मूल्यों को शिक्षक एवं विद्यालय द्वारा बच्चे के व्यक्तित्व एवं चारित्रिक विकास का आधार बनाया जाए।
- मूल्यों के विकास में शिक्षक एवं विद्यालय द्वारा मानवतावादी एवं धर्म-निरपेक्षता से संबंधित दृष्टिकोण अपनाया जाए।
- विद्यालय द्वारा विभिन्न प्रकार के मूल्यों का बच्चे के व्यावहारिक जीवन में अनुप्रयोग एवं समाज में उनका प्रचार-प्रसार सुनिश्चित किया जाए।
- विद्यालय द्वारा ऐसी सामाजिक, सामूहिक एवं लोकतांत्रिक क्रियाओं एवं कार्यों का संचालन एवं संपादन किया जाए जिनके माध्यम से बच्चे में विभिन्न प्रकार के मूल्यों का उचित विकास किया जा सके।
- मूल्यों के विकास के संदर्भ में शिक्षक एवं विद्यालय द्वारा सर्वधर्म समभाव, सामाजिक

© NCERT not to be republished

दायित्व एवं सार्वजनिक कल्याण की भावना पर बल देना चाहिए तथा समाज में उसका उचित विकास किया जाना चाहिए।

- शिक्षक एवं विद्यालय विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों एवं अवसरों के संदर्भ में समाज एवं बच्चों में अहिंसा, समूह भावना, बंधुत्व, परस्पर सहयोग एवं सहनशीलता आदि से सबंधित मूल्यों का विकास करें।
- लोकतांत्रिक मूल्यों को आधार बनाकर बच्चों एवं समाज को विभिन्न प्रकार के मूल्यों से परिपूर्ण किया जाए तथा लोकतंत्र एवं संबंधित मूल्यों के प्रति एक आशावादी एवं अभिप्रेरित दृष्टिकोण विकसित किया जाए।

निष्कर्ष

संक्षेप रूप में यह कहा जा सकता कि प्रत्येक पीढ़ी विरासत में प्राप्त मूल्यों को अपनाती है तथा उन्हें आत्मसात करती है। इन मूल्यों के द्वारा न केवल व्यक्ति विशेष का, अपितु समाज विशेष का भी उचित विकास होता है। मूल्य न केवल व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र को पतन से बचाते हैं, अपितु ये मानव के सुखद भविष्य को भी सुनिश्चित करने का कार्य करते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह अनिवार्य है कि वह एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का सक्रिय सदस्य बनने हेतु समाज द्वारा स्वीकार्य मानवीय मूल्यों को मन, वचन एवं कर्म से आत्मसात करे एवं उसके अनुरूप व्यवहार करे जिससे कि उसका स्वयं का, परिवार का, समाज का, राष्ट्र का, विश्व का तथा संपूर्ण मानवता का हित हो सके।

संदर्भ

पाटिल और भदौरिया. 2008. *समाजशास्त्र परिचय*. मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल.

बाबेल, बसन्ती लाल. 2009. *भारत का संविधान*. सेंट्रल लॉ पब्लिकेशंस, इलाहाबाद.

भारत सरकार. *नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन, 1986 (1992 में संशोधित)*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.

———. 1993. “शिक्षा बिना बोझ के”. *राष्ट्रीय सलाहकार समिति की रिपोर्ट, 1993*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.

यादव, नरेश कुमार. 2012. *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. आरोही पब्लिकेशन, नयी दिल्ली.

———. 2013. *सामाजिक अध्ययन/सामाजिक विज्ञान शिक्षण*. आरोही पब्लिकेशन, नयी दिल्ली.

रावत, हरिकृष्ण. 2002. *मानवशास्त्र विश्वकोश*. रावत पब्लिकेशंस, जयपुर.

रा.शै.अ.प्र.प. 2000. *स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. सामाजिक विज्ञान का शिक्षण*, राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार-पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें*, राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार-पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished

———. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. शांति के लिए शिक्षा*, राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार-पत्र. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

शर्मा, रामनाथ और राजेन्द्र कुमार शर्मा 2006. *शैक्षिक समाजशास्त्र*. एटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली.

© NCERT not to be republished